अंक 14 जनवरी-मार्च (2020) ISSN:2348-7771

PEER REVIEWED AND REFEREED JOURNAL

आभ्यंतर

लोक, भाषा, विश्व साहित्य और समकालीन वैचारिकी का मंच

आभ्यंतर

लोक,भाषा,विश्व साहित्य और समकालीन वैचारिकी का मंच

AABHYANTAR
PEER REVIEWED AND REFEREED
JOURNAL
ISSN:2348-7771
अंक 14 जनवरी-मार्च 2020

संस्थापक
अखिलेश कुमार द्विवेदी
(संस्कृत शिक्षक, ग्राम-हंटरगंज, जिला-चतरा, राज्य-झारखण्ड)

परामर्श
प्रो. अनिल राय
(हिंदी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय)
डॉ. विनोद तिवारी
(हिंदी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय)
डॉ. रामनारायण पटेल
(हिंदी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय)
डॉ. सुधांशु शुक्ल
(हिंदी विभाग, हंसराज कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय)
डॉ. राजेश शर्मा
(हिंदी विभाग, हंसराज कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय)
डॉ. यांचा पाण्डेय
(हिंदी विभाग, रामनारायण उच्च महाविद्यालय, विनोबा भावे विश्वविद्यालय)
डॉ. पारसेन्द्र पंकज
(सहा. प्रो. दिल्ली विश्वविद्यालय)

मूल्यांकन समिति मंडल
प्रो. कैलाश कौशल
(हिंदी विभाग जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय जोधपुर, राजस्थान)
प्रो. रमेश चन्द्र त्रिपाठी
(हिंदी विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, उत्तर प्रदेश)
प्रो. पवन अग्रवाल
(हिंदी विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, उत्तर प्रदेश)
प्रो. सत्यकेतु
(हिंदी विभाग, डॉ. अम्बेडकर विश्वविद्यालय, नई दिल्ली)
प्रो. प्रमोद कोवप्रत
(हिंदी विभाग, कालीकट विश्वविद्यालय, केरल)
प्रो. प्रीति सागर
(हिंदी एवं तुलनात्मक साहित्य विभाग, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा)
प्रो. अवधेश कुमार
(हिंदी एवं तुलनात्मक साहित्य विभाग, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा)
प्रो. मुन्ना तिवारी
(हिंदी विभाग, बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झांसी)
प्रो. रमा
(हिंदी विभाग, हंसराज कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय)
डॉ. माला मिश्रा
(हिंदी विभाग, अदिति महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय)
डॉ. सुशील राय
(सेंट एंड्रूज स्नातकोत्तर महाविद्यालय गोरखपुर, उत्तर प्रदेश)
डॉ. नरेंद्र मिश्र
(हिंदी विभाग, जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर, राजस्थान)
डॉ. बलजीत प्रसाद श्रीवास्तव
(डॉ. भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय, लखनऊ, उत्तर प्रदेश)
डॉ. एन. लक्ष्मी
(सहायक प्रोफेसर, अंडमान कॉलेज, पोर्ट ब्लेयर)
डॉ. विनय कुमार
(हिंदी विभाग, सत्यवती कॉलेज(सांध्य), दिल्ली विश्वविद्यालय)

संपादक
कुमार विश्वमंगल पाण्डेय

उप-संपादक
दीपाली कुजूर

सह-संपादक
सज्जन कुमार पासवान
पंकज कुमार

संपादन संपर्क
डी-1448,जहाँगीर पुरी नई दिल्ली-110033
E-MAIL- aabhyantar123@gmail.com
BLOG- aabhyantar.blogspot.com
Phone no- 9130679861
Whatsapp no- 9404620059

मूल्य रु. 100, वार्षिक मूल्य रु. 400, संस्था और पुस्तकालय रु. 600, आजीवन रु. 5000, सभी भुगतान मनीआर्डर, चेक, बैंक-ड्राफ्ट आभ्यंतर के नाम से किए जाएँ दिल्ली के बाहर के चेक में बैंक कमीशन अवश्य जोड़ें| सभी पद अवैतनिक और अव्यावसायिक हैं| आभ्यंतर में प्रकाशित लेखकों के विचार से संपादकीय सहमति अनिवार्य नहीं| सभी कानूनी मामले दिल्ली न्यायालय के अधीन होंगे|

Scanned with CamScanner

इस अंक में...

शोध-आलेख...

4.संपादकीय...कुमार विश्वमंगल पाण्डेय

5.भोजपुरी लोकगीतों में 'कजरी' की प्रासंगिकता...डॉ. आरती पाठक

8.गाँधी-शिक्षा, सिद्धांत व मूल्य- वर्तमान संदर्भ में...डॉ. संध्या जैन

11.जीवन मूल्य : स्वरूप एवं महत्व...डॉ. श्रीनिवास सिंह यादव

14.वैश्वीकरण का स्वरूप और प्रभाव...विकास शर्मा

20.प्रेमचंद की कहानियाँ : दलित आलोचकों की दृष्टि में...प्रेम कुमार

23.भूमंडलीकरण के दौर में हिंदी कहानी...डॉ. ममता सिंह

25.बाढ़-त्रासदी और हिंदी कहानी...मो. साबिर

28.मजदूर वर्ग के अपराजेय की कहानी 'टेपचू'...डॉ. मृत्युंजय कोईरी

31.सूरदास और मीरा के काव्य में लोक और शास्त्र का द्वंद...रेखा कुमारी

35.बिहारी के काव्य में चित्रांकन का स्वरूप...दीपाली

40.गांधी की बुनियादी शिक्षा : अवधारणा एवं नारी स्वावलंबन...डॉ. प्रज्ञा पाण्डेय

43.हिंदी सिने-संगीत तथा लोक संगीत...नितप्रिया प्रलय

46.गोविंद मिश्र के यात्रा-साहित्य में अंतर्निहित लोक-संस्कृति...डॉ. सोमाभाई पटेल

50.यात्रा साहित्य की अवधारणा और प्रासंगिकता...प्रो. बालेश्वर राम

53.निराला के काव्य में राष्ट्रीय-चेतना...दीपक कुमार भारती

57.कवि नागार्जुन का सांस्कृतिक निहितार्थ : लोकऔर जनता का अंतर्द्वंद्व...अमित कुमार

61.भाषा-विवाद में शिवपूजन सहाय का हस्तक्षेप...अम्बिका कुमारी

65.मछुआरे: मछुआरे जीवन की त्रासदी और प्रेम की दारुण कथा...सारिका ठाकुर

67.हिंदी कविता में दलित चेतना...डॉ. प्रभात कुमार 'प्रभाकर'

70.भाषा संरक्षण का महत्व एवं अनिवार्यता: एक समाज भाषा वैज्ञानिक दृष्टि (निहाली भाषा के विशेष संदर्भ में)...अनामिका गुप्ता

74.हिंदी मानववाची नामपद : रूप-रचना व विश्लेषण...अभिजीत प्रसाद

80.21वीं शताब्दी के नाट्य साहित्य में नारी के बदलते स्वरूप का अध्ययन (हिंदी और पंजाबी के नाटकों की तुलनात्मक दृष्टि से) ...गुरमीत सिंह

84.नवीन तकनीकी आयामों में रचती बसती हिंदी...रिपुदमन तिवारी

89.किस्सा गुलाम : गुलामी का आयाम...जितेन्द्र कुमार यादव

92.वैश्विक चिंतन के साथ गतिमान है मैथिली साहित्य (मैथिली मूल से अनुदित आलेख)...नारायण झा

98.संजीव की कहानियों में आदिवासी जीवन का यथार्थ-बोध...डॉ. अर्जुन के तड़वी

100.आदिवासी कविताओं में स्त्री...सायरा बानो

106.बिहारी लाल के काव्य में चित्रधर्मिता...जयंती माला

108.अखिलेश की कहानियों का सामाजिक यथार्थ- समकालीन सन्दर्भ में...निधि त्रिपाठी

113.वर्तमान समाज में नारी की बदलती छवि...रेखा भाटी

117.जनवाद की कसौटी पर गोरख पाण्डेय की कविता...अभिमन्यु कुमार राय

120.लोकगाथा : जातीय पीड़ा की सामूहिक अभिव्यक्ति...रामलखन कुमार

125.कहानी का रंगमंच : स्वरूप और शैली...सरिता

130.हंसराज रहबर के कथा साहित्य में तत्कालीन सामाजिक संरचना...डॉ. पंकज कुमार

136.लोकगीत की अवधारणा तथा संबलपुरी लोकगीत में स्पंदित जीवन...डॉ. प्रताप केशरी होता, डॉ. टिकेश्वर होता

142.हिंदी कथा साहित्य में आदिवासी जनजीवन...नीतू कुमारी

145.'तुम्हारे प्यार की पाती' में अभिव्यक्त युग जीवन...डॉ. शेख अब्दुल वहाब

147.हिंदी नई आलोचना में कुमार विमल का अवदान...डॉ. गोस्वामी जैनेंद्र कुमार भारती

151.कुमार विमल की कविताओं में अभिव्यक्त जीवन-दर्शन...डॉ. कृष्णा नन्द भारती

154.भीष्म साहनी के उपन्यासों में राजनीतिक मूल्यबोध...रीमा गुप्ता

158.भारतेंदु के निबंधों में सामाजिक संस्कृति का प्रभाव...प्रो. अवधेश कुमार

162.संत बौआ साहब की रचनाओं का भाव पक्ष-एक अनुशीलन...पप्पू कुमार

166.समकालीन हिंदी यात्रा-वृतों में सामाजिक आयाम...डॉ. अनिता भट्ट

169.'मरंग गोड़ा नीलकंठ हुआ' उपन्यास में चित्रित आदिवासी समस्याएं...सुरेश डुडवे

174.पृथ्वीराज रासो का साहित्येतिहासिक अनुशीलन...अभिनव

177.डॉ. रामविलास शर्मा का आलोचना कर्म : हिंदी आलोचना का 'ज्ञानकांड'...अमन कुमार

184.हिंदी कहानी का आदिवासी स्वर...डॉ. रौबी

➢ कविता.... 1.बादल जीवन फिर लाए तो 2.शिक्षक 3.एक व्यक्ति की व्यथा 4.आधुनिक नारी 5.गज़ल 6.शायर 7.तेरे जाने के बाद 8.मेरे कालिदास 9.वनिता 10.आओचांद पर चले...निमिषा सिंघल

Scanned with CamScanner

डॉ. रामविलास शर्मा का आलोचना कर्म : हिंदी आलोचना का 'ज्ञानकांड'

अमन कुमार

शोधार्थी, हिंदी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

डॉ. रामविलास शर्मा हिंदी के प्रख्यात मार्क्सवादी आलोचक, विचारक भाषाविद एवं कवि हैं। डॉ. रामविलास शर्मा 'हिंदी के प्रहरी'[1] हैं। हिंदी आलोचना में उनका उदय 'प्रेमचंद' (1941) के मूल्यांकन के साथ होता है। डॉ. शर्मा पर एक इल्जाम है कि जिससे बाकी आलोचक बरी किये जाते हैं, वह यह कि उन्होंने ध्वंसात्मक आलोचना की है। इस सवाल के जवाब के साथ ही उनकी आलोचना क्षेत्र में प्रवेश की भूमिका को समझा जा सकता है। संक्षेप में इस प्रवेश के कारण को समझ लेते हैं।

प्रगतिशील आंदोलन की शुरूआत 1936 में प्रगतिशील लेखक संघ के प्रथम अधिवेशन के साथ होती है। माना कि प्रगतिवादी आंदोलन का संबंध मार्क्सवाद से है। पर क्या जिन वैचारिक प्रवृत्तियों के समुच्चय का नाम मार्क्सवाद है। वह कार्ल मार्क्स से पहले मौजूद नहीं थी? बिल्कुल थी। इस बात को ठीक-ठीक न समझने के कारण कुछ आलोचक प्रगतिशील दृष्टिकोण को प्राचीन साहित्य एवं संस्कृति का विरोधी समझते हैं। मान लिया कि "मार्क्सवादी दृष्टि मूलतः सामाजिक और ऐतिहासिक दृष्टि है। वह किसी वस्तु का अध्ययन देश-काल के परिप्रेक्ष्य में करती है। विवेच्य में अंतर्विरोध का विश्लेषण करके वैज्ञानिक ढंग से प्रतिक्रिया और प्रगति के तत्वों को अलग-अलग छाँटती है।"[2]

परंतु "साहित्यकार या कलाकार स्वभावतः प्रगतिशील होता है।"[3] और वह "अप्रिय अवस्थाओं का अंत कर देना चाहता है।"[4] प्रेमचंद के इस उद्बोधन से स्पष्ट है कि जो प्रगतिशील नहीं वह साहित्यकार नहीं। प्रेमचंद ने साहित्यकार को स्वभावतः प्रगतिशील बताया तो इस प्रगतिशीलता का लक्षण भी बताया कि वह अप्रिय अवस्थाओं का अंत कर देना चाहता है। प्रगतिवादी आंदोलन के कुछ आलोचक यह समझ बैठे कि वाल्मीकि कालिदास और तुलसीदास प्रगतिशील नहीं हो सकते थे, क्योंकि वे मार्क्सवादी नहीं थे, यह हास्यास्पद है। उनकी इस संकीर्णता का एक उदाहरण देखिए- "भारतीय साहित्य, पुरानी सभ्यता के नष्ट हो जाने के बाद से जीवन के यथार्थताओं से भागकर उपासना और मुक्ति की शरण में जा छिपा है। नतीजा यह हुआ कि वह निस्तेज और निष्प्राण हो गया है, रूप में भी और अर्थ में भी। और आज हमारे साहित्य में भक्ति और वैराग्य की भरमार हो गई है। भ्रवुकता ही का प्रदर्शन हो रहा है, विचार और बुद्धि का एक प्रकार से बहिष्कार कर दिया गया है। पिछले दो सदियों में विशेषकर इसी तरह का साहित्य रचा गया है जो हमारे इतिहास का लज्जास्पद काल है।"[5]

यह कथन प्रगतिशील लेखक संघ के घोषणापत्र से है। यह घोषणा-पत्र 1935 ई. में तैयार किया गया था और उस समय तक नजरुल, रवीन्द्रनाथ, निराला, प्रेमचंद, इकबाल साहित्य में प्रतिष्ठित और लोकप्रिय हो चुके थे और तो और उर्दू में हाली का मुसद्दस तो बहुत पहले ही लिखा जा चुका था। हिंदी के घोषित प्रगतिशील आलोचक शिवदान सिंह चौहान ने विशाल भारत 1937 में एक लेख लिखा- 'भारत में प्रगतिशील साहित्य की आवश्यकता।' प्रस्तुत लेख में उनका बयान देखें कैसे हिंदी साहित्य के चारों कारों को एक साथ ध्वस्त करने में आतुर दिख रहे हैं। "भक्तिकाल में भी केवल आत्मसमर्पण, भक्ति में तल्लीनता आदि भाव ही हमारे तुलसी, सूर आदि के साहित्य में परे पाये थे। उनके बाद रीतिकाल में विचारधारा ले दूर, हमारे कवि, कवितावद्ध कोकशास्त्र लिखने लगे उनसे इस अधोगति के अलावा और उम्मीद भी क्या की जा सकती थी, और वर्तमान काल में भी किसी स्वस्थ विचारधारा का नाम नहीं।"[6]

जाहिर है शुरूआती प्रगतिशील आलोचक अपनी परंपरा का उचित मूल्यांकन नहीं कर सके थे। इन्होंने इतना कूड़ा-कचरा आलोचना के नाम पर फैला दिया था कि रामविलास शर्मा को कविता लिखना छोड़ आलोचना के मैदान में आना पड़ा। फिर क्या! नव निर्माण के लिए उन्होंने शुरूआत में ध्वंसात्मक आलोचना की। नव-निर्माण के लिए पहले ध्वंस प्रकृति का ही नियम है।

आचार्य शुक्ल ने 'ध्वंस' के संदर्भ में लिखा था- "ध्वंस जब नए निर्माण के लिए आवश्यक होता है, तब उसकी भीषणता भी सुंदर होती है। लोक की पीड़ा, बाधा, अन्याय, अत्याचार के बीच दबी हुई आनंद-ज्योति भीषण शक्ति में परिणत होकर अपना मार्ग निकालती है और फिर लोकमंगल और लोकरंजन के रूप में अपना प्रकाश करती है।

रामविलास शर्मा की साहित्यिक मान्यताएं:-

रामविलास शर्मा ने अपने निबंधों में साहित्य, कला, सौंदर्य और आलोचना संबंधी विचार प्रस्तुत किए हैं। इन विचारों का सामंजस्य उनके द्वारा की गई व्यवहारिक आलोचना में दिखाई देता है। 'आस्था और सौंदर्य' में उन्होंने कला के संबंध में अपनी मान्यताएं स्पष्ट की है। उनके अनुसार 'कला की विषयवस्तु न वेदान्तियों का ब्रह्म है, न हेगल का निरपेक्ष निरपेक्ष विचार। मनुष्य का इंद्रियबोध, उसके भाव उसके विचार, उसका सौंदर्यबोध कला की विषयवस्तु है।"[8]

यहां ध्यान देने वाली बात यह है कि "डॉ. शर्मा कला और साहित्य में भेद नहीं मानते हैं। इसलिए उनका उपर्युक्त कथन कला और साहित्य दोनों के संबंध में मान्य समझा जाना चाहिए।"[9]

साहित्य के तत्वों की परिवर्तनशीलता पर रामविलास शर्मा लिखते हैं- "साहित्य के सभी तत्व समान रूप से परिवर्तनशील

Scanned with CamScanner